इस्लाम में परवरिश (2 का भाग 1)

रेटिंग:

विवरण: ?????? ???? ?? ??? ???? ?? ??? ?? ????-???? ?? ???????? ??? ????? ?? ????? ???

श्रेणी: पाठ > सामाजिक बातचीत > मुस्लिम समुदाय

द्वारा: Abdurrahman Murad (© 2013 NewMuslims.com)

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

उद्देश्य:

·इस्लामी नैतिकता और परिवार के आदर्शों के महत्व को जानना।

·एक परिवार के रूप में दीन का अध्ययन करने के लिए निश्चित समय निकालने के महत्व को जानना।

·अपने बच्चों के साथ प्रभावी ढंग से बात करने के महत्व को समझना।

अरबी शब्द

·*??????????* - ईश्वर की इच्छा, अगर ईश्वर ने चाहा। यह एक अनुस्मारक और स्वीकृति है कि अल्लाह की इच्छा के बिना कुछ भी नहीं होता है।

·*??????* - अध्ययन के क्षेत्र के आधार पर सुन्नत शब्द के कई अर्थ हैं, हालांकि आम तौर पर इसका अर्थ है जो कुछ भी पैगंबर ने कहा, किया या करने को कहा।

·*???* - इस्लामी रहस्योद्घाटन पर आधारित जीवन जीने का तरीका; मुसलमान की आस्था और आचरण का कुल योग। दीन का प्रयोग अक्सर आस्था, या इस्लाम धर्म के लिए किया जाता है।

परिचय

एक प्राचीन इस्लामी समाज की कुंजी परिवार से शुरू होती है, क्योंकि यह एक स्वस्थ समाज का केंद्र बिंदु है। पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने परिवार का ठीक से पालन-पोषण करने के लिए विस्तृत चरण बताए; निःसंदेह यह एक बड़ी जिम्मेदारी है। पैगंबर ने कहा:

"जो कोई दूसरों के लिए जिम्मेदार है, लेकिन इस जिम्मेदारी को ठीक से निभाने में विफल रहता है, उसे जन्नत (स्वर्गीय निवास) जाने से रोक दिया जाएगा।" (सहीह मुस्लिम)

परवरिश वास्तव में एक बहुत बड़ा कार्य है; विशेष रूप से, पश्चिम देशों मे परवरिश करना। माता-पिता को क्या सोचना चाहिए, उन्हें अपने बच्चों की परवरिश कैसे करनी चाहिए? इस लेख में हम कुछ व्यावहारिक युक्तियों का पता लगाएंगे जो हर माता-पिता को पता होना चाहिए।

एक उचित घरेलू वातावरण बनाएं

एक 'खुशहाल' घर में पले-बढ़े बच्चे आमतौर पर मजबूत, बेहतर मुसलमान बनते हैं। वे अधिक आसानी से इस्लामी आदर्शों को अपनाते हैं और सामान्य विनम्रता और शिष्टाचार को बनाए रखते हैं जो हर मुसलमान के लिए मानक होना चाहिए।

'खुशहाल' घर को सुनिश्चित करने के लिए, माता-पिता को स्वयं उचित इस्लामी नैतिकता को बनाए रखना चाहिए। साथ ही, माता-पिता को एक दूसरे के साथ स्पष्ट, खुले तरीके से बातचीत करना चाहिए। जब बच्चे देखते हैं कि उनके माता-पिता इस तरीके से बात करते हैं; उनके माता-पिता में से कोई भी उत्तेजित, क्रोधित या हिंसक नहीं होता है, तो यह बच्चों को अपनी भावनाओं और विचारों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करेगा और वे सुरक्षित और सुदृढ़ महसूस करेंगे। यह कदम बिल्कुल जरूरी है, क्योंकि यह समस्याओं के प्रमुख कारणों में से एक है। यदि एक बच्चे को लगता है कि वे अपने माता-पिता के साथ बात नहीं कर सकते हैं, तो वे इसकी कमी कहीं और से पूरी करेंगे, ये उनके दोस्त भी हो सकते हैं जो बच्चो को बहुत नकारात्मक तरीके से प्रभावित कर सकते हैं। नशीली दवाओं की लत, विवाह पूर्व संबंध और इससे भी बदतर परिणाम हो सकते हैं।

इस माहौल को सुनिश्चित करने के लिए अगला कदम यह है कि आप अपने बच्चों से प्यार करें और उन्हें दिखाएं कि आप उनसे प्यार करते हैं। पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने अल-अक्रा बिन हबीस की उपस्थिति में अपने पोते अल-हुसैन को चूमा। अल-अक्रा ने कहा: "मेरे दस बच्चे हैं और मैंने उनमें

से किसी को भी कभी नहीं चूमा!" पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने कहा: "**जो कोई भी दया नहीं करेगा, उस पर कोई दया नहीं की जाएगी।"**[1]

जो बच्चे प्यार महसूस करते हैं, वे अपने माता-पिता को भी प्यार देंगे। यह पैगंबर के बच्चों के साथ व्यवहार करने के तरीके से स्पष्ट है। एक दिन जब पैगंबर नमाज़ पढ़ रहे थे, उन्होंने अपने सजदे को लंबा किया, और साथियों को चिंता होने लगी; कुछ समय बाद, पैगंबर ने सामान्य रूप से नमाज़ को फिर से शुरू किया। बेशक, साथियों ने पैगंबर से लंबे समय तक सजदा करने के बारे में पूछा; उन्होंने कहा: "अल्लाह के दूत, आपने सजदा को लंबा किया और हमने सोचा कि आपको या तो रहस्योद्घाटन मिला है या आपके साथ कुछ बुरा हुआ है!" पैगंबर मुस्कुराये और कहा: "**इन दोनों में से कोई बात नही है, मेरा पोता मेरी पीठ पर चढ़ गया था और मुझे उसका आनंद कम करना ठीक नही लगा।"**[2]

घर को 'खुशहाल' बनाने के लिए एक और कदम यह है कि माता-पिता दोनों बच्चों की परवरिश में समान रूप से शामिल हों। अक्सर हम दो माता-पिता में से एक को अधिक शामिल होते हुए देखते हैं, जबकि दूसरा दूर रहता है। माता-पिता दोनों के प्यार और स्नेह के साथ पाला गया बच्चा मानसिक, मनोवैज्ञानिक स्तर पर बहुत अधिक समृद्ध होगा, उसकी तुलना मे जिसे केवल एक माता या पिता ने पाला हो।

अध्ययन का समय

इस्लाम के उचित ज्ञान के बिना एक घर निराशा और पथभ्रष्ट का घर है। दीन का अध्ययन करने से बच्चों को ईमानदार मुसलमान बनने के लिए मार्गदर्शन और शिक्षा प्राप्त होगी। इस 'अध्ययन के समय' में क़ुरआन, सुन्नत और पवित्र पूर्वजों की कहानियों की शिक्षाएं शामिल होनी चाहिए।

यदि माता-पिता क़ुरआन पढ़ने में पारंगत नहीं हैं, तो उन्हें अपने बच्चो को स्थानीय मस्जिद में क़ुरआन सीखने के लिए भेजना चाहिए। यदि माता-पिता को अपने क्षेत्र में ही ये मिल जाता है, तो उन्हें बच्चो को वहां भेजने के लिए इंतजार नही करना चाहिए; यह सिर्फ एक शुरुआत है। पूरे परिवार को एक साथ इस्लाम का अध्ययन करने के लिए लगातार प्रयास करना चाहिए। आज के समय मे इसके लिए संसाधन हैं, इसलिए यह एक समस्या नहीं होनी चाहिए। कई वेबसाइटें हैं जैसे (newmuslims.com) जो इस्लाम की महत्वपूर्ण, मौलिक शिक्षाओं को आसान, सीधे तरीके से सिखाती है।

यह महत्वपूर्ण है कि माता-पिता हर हफ्ते कुछ समय निकालें, जिसमें परिवार एक साथ हो और एक साथ सीखे। इससे परिवार की इकाई को मजबूत करने में मदद मिलेगी। बच्चों को यह नहीं लगेगा कि वे सीखने की प्रक्रिया में 'बंधे' हुए हैं, क्योंकि वयस्क भी इस प्रक्रिया में भाग ले रहे हैं।

हमारे समाज में अनेक विकर्षणों के कारण शिक्षण विधियों को रोचक बनाया जाना चाहिए। माता-पिता को विविधिता लाना चाहिए और मजेदार तरीके से पढ़ाना चाहिए; यह खेल के माध्यम से हो या सबसे अच्छा करने वाले को पुरस्कार देकर हो।

माता-पिता हमेशा चाहते हैं कि उनके बच्चे उनसे से बेहतर बनें। यह रवैया बहुत अच्छा है, लेकिन इससे माता-पिता को अपने बच्चो पर अधिक बोझ नही डालना चाहिए। निरंतरता सफलता की कुंजी है।

अपने बच्चों की सुनें

पश्चिमी समाज में, अपने बच्चों के साथ संचार की एक खुली लाइन होना नितांत आवश्यक है। बच्चों को सुनने और समझने की जरूरत है और माता-पिता को यह देखने की जरूरत है कि वे क्या कहते हैं, कोई निर्णय किये बिना।

यदि बच्चे समस्या होने पर अपने माता-पिता से खुलकर बात करने में सुरक्षित महसूस करेंगे, संदेह होने पर यदि वे प्रश्न पूछने मे सुरक्षित महसूस करेंगे, तो इससे माता-पिता और उनके बच्चों के बीच का बंधन मजबूत होगा, यह नकारात्मक प्रभावों को भी दूर करेगा जो विकास के इस महत्वपूर्ण चरण में बच्चे को प्रभावित कर सकते हैं।

कई माता-पिता अपने बच्चों से बात करते हैं, लेकिन उनकी सुनना भूल जाते हैं, अपने बच्चों को अपने उपकरणों पर छोड़ देते हैं और मार्गदर्शन की आवश्यकता होने पर उन्हें अपना निर्णय लेने के लिए मजबूर करते हैं। जितना अधिक आप अपने बच्चों को घर में शामिल करते हैं, उतनी ही कम संभावना है कि वे गलत रास्ते पर जाएंगे, इंशाअल्लाह।

माता-पिता का अपने बच्चों की सुनना एक बहुत ही महत्वपूर्ण उपकरण है; यह बच्चों के लिए एक 'वास्तविकता' के रूप में कार्य करता है जो उनके माता-पिता के व्यवहार का आईना होता है।

बच्चों और माता-पिता के बीच इस रिश्ते को मजबूत करने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) की जीवनी। कहानियों को सोने से पहले सुनाया जा सकता है और बच्चों से पूछा जा सकता है कि उन्हें कहानी में सबसे ज्यादा क्या पसंद आया। उन्हें कहानियों से बुनियादी सबक अपने जीवन में लागू करने के लिए भी कहा जा सकता है। इससे वे अपने लिए बेहतर निर्णय लेने में सक्षम होंगे, गलत कामों के मे नही पड़ेंगे, और खुद को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में भी सक्षम होंगे।

फुटनोट:

[1] ???? ??-??????

[2] ????

इस लेख का वेब पता

https://www.newmuslims.com/hi/articles/219

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।